वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के विश्लेषण का एक आलोचनात्मक अध्ययन: प्राचीन परमाणुवाद और समकालीन प्रासंगिकता

(A Critical Study of the Analysis of Matter in Vaisheshika Philosophy: Ancient Atomism and Contemporary Relevance)

लेखक: *Anand Singh Dhami*

प्रस्तुतकर्ता: *Indian Philosophy & Ethics*

विषय क्षेत्र: वैशेषिक दर्शन, कणाद, पदार्थ विज्ञान, प्राचीन भारतीय परमाणुवाद, न्याय-वैशेषिक, पारिस्थितिकीय दर्शन, क्वांटम दर्शन।

संक्षिप्त परिचय: प्राचीन भारतीय दार्शनिक परंपरा के एक प्रमुख स्तंभ, वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित पदार्थ-विश्लेषण के सिद्धांतों का एक गहन एवं आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य ऋषि कणाद द्वारा प्रणीत 'सप्त पदार्थ' एवं 'परमाणुवाद' के सिद्धांतों को केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से न देखकर, उनकी समकालीन वैज्ञानिक एवं दार्शनिक प्रासंगिकता को परखना है। पत्र के माध्यम से यह तर्क विकसित किया गया है कि वैशेषिक की 'समवाय' (अविभाज्य संबंध) तथा 'विशेष' (विशिष्टता) जैसी अवधारणाएँ आधुनिक क्वांटम भौतिकी एवं पारिस्थितिकी चिंतन के लिए एक विचारणीय दार्शनिक आधार प्रदान करती हैं। साथ ही, इसकी सीमाओं का विवेचन करते हुए यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार यह दर्शन आज के युग में एक समग्र एवं संतुलित जीवन दृष्टि के निर्माण में योगदान दे सकता है।

🔗 ऑनलाइन विस्तृत लेख: - *https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/01/vaisheshika-philosophy-nature-conservation.html*

© Anand Singh Dhami| Indian Philosophy & Ethics | Educational & Research Use

वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के विश्लेषण का एक आलोचनात्मक अध्ययन: प्राचीन परमाणुवाद और समकालीन प्रासंगिकता

1. परिचय

भारतीय चिंतन परंपरा में जहाँ अद्वैत जैसे दर्शन आत्मा और ब्रह्म के अद्वैत पर बल देते हैं, वहीं वैशेषिक दर्शन की अनूठी भूमिका ब्रह्माण्ड की भौतिक संरचना के विवेचन में निहित है। यह दर्शन तत्वमीमांसा और प्राकृतिक विज्ञान के बीच एक सेतु का कार्य करता है। आज जब विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ अस्तित्वगत एवं पारिस्थितिकीय संकट भी गहरा रहा है, एक ऐसे दार्शनिक ढाँचे की आवश्यकता है जो भौतिक जगत की जटिलता को समझने के साथ-साथ नैतिक आचरण का मार्ग भी दिखाए। इसका मुख्य प्रश्न यह है: **क्या वैशेषिक दर्शन का पदार्थ-विश्लेषण, जो लगभग २५०० वर्ष पूर्व प्रतिपादित हुआ, आज के वैज्ञानिक युग में कोई सार्थक एवं व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है?** इस प्रश्न के समाधान हेतु हमारा उद्देश्य वैशेषिक के मूल सिद्धांतों-विशेष रूप से सप्त पदार्थ, परमाणुवाद, समवाय और गुण-कर्म के सिद्धांत का गहन विश्लेषण करना है तथा उनकी तुलना आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणाओं (जैसे क्वांटम यांत्रिकी और पारिस्थितिकी) से करना है। साथ ही, इस दर्शन पर की गई प्रमुख आलोचनाओं का मूल्यांकन करते हुए, इसे एक समग्र जीवन दृष्टि के रूप में पुनर्व्याख्यायित करना भी है।

2. साहित्य समीक्षा

वैशेषिक दर्शन पर हुए पूर्ववर्ती शोधों को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहली श्रेणी में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन और एस.एन. दासगुप्ता जैसे विद्वानों के कार्य आते हैं, जिन्होंने अपने विशद ग्रंथों में वैशेषिक को समग्र भारतीय दार्शनिक परिदृश्य में स्थापित किया है। इनके कार्यों में वैशेषिक की मूलभूत अवधारणाओं की व्याख्या तो मिलती है, किंतु उनकी आधुनिक प्रासंगिकता पर सीमित चर्चा हुई है।

दूसरी श्रेणी तुलनात्मक अध्ययनों की है। डेबीप्रसाद चट्टोपाध्याय के कार्य "साइंस एंड सोसाइटी इन एन्शिएंट इंडिया" तथा एच.जी. कावर्ड के शोध में वैशेषिक के परमाणुवाद की तुलना ग्रीक दार्शनिक डेमोक्रिटस के परमाणुवाद से की गई है। ये अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जहाँ ग्रीक परमाणुवाद यांत्रिक और भाग्यवादी है, वहीं वैशेषिक का परमाणुवाद नैतिक कर्मसिद्धांत और चेतना से जुड़ा हुआ है।

तीसरी श्रेणी अत्यंत नवीन है, जिसमें फ्रिट्ज़ स्टाल जैसे विद्वानों ने वैशेषिक की श्रेणियों का विश्लेषणात्मक दर्शन (एनालिटिकल फिलॉसफी) के परिप्रेक्ष्य से अध्ययन किया है। किंतु, **एक स्पष्ट शोध अंतराल** यह प्रतीत होता है कि वैशेषिक दर्शन के सिद्धांतों और समकालीन वैज्ञानिक चुनौतियों (विशेषकर पर्यावरणीय संकट एवं क्वांटम सिद्धांतों के दार्शनिक निहितार्थ) के बीच एक व्यवस्थित एवं गहन संवाद स्थापित करने का प्रयास अपेक्षाकृत कम हुआ है। यह शोध पत्र इसी अंतराल को भरने का एक प्रयास है।

3. शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत के रूप में ऋषि कणाद के *वैशेषिक सूत्र* के मूल संस्कृत पाठ का, उसके शब्दार्थ एवं भावार्थ की गहन समझ के साथ, विश्लेषण किया गया है। साथ ही, परंपरा में प्रामाणिक मानी जाने वाली टीकाओं, विशेषकर प्रशस्तपाद रचित *पदार्थधर्मसंग्रह* को भी द्वितीयक प्राथमिक स्रोत के रूप में शामिल किया गया है।

इस पाठ्य विश्लेषण (Textual Analysis) को आधार बनाकर, वैशेषिक की अवधारणाओं की तार्किक विवेचना (Logical Deduction) की गई है। आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता स्थापित करने के लिए तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) का उपयोग किया गया है, जिसमें दार्शनिक सिद्धांतों की तुलना समकालीन वैज्ञानिक सिद्धांतों से की गई है। यह तुलना सादृश्य (Analogy) के स्तर पर है, न कि ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध करने के उद्देश्य से। अंत में, एक विवेचनात्मक पद्धति (Critical Method) द्वारा इस दर्शन की सीमाओं एवं संभावनाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

4. विश्लेषण एवं विवेचना

4.1 सप्त पदार्थ: एक बहुआयामी वर्गीकरण प्रणाली

वैशेषिक दर्शन समस्त विद्यमान वस्तुओं (भाव) को सात अपरिणामी श्रेणियों या 'पदार्थों' में विभाजित करता है: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। यह वर्गीकरण केवल भौतिक न होकर दार्शनिक है। उदाहरणार्थ, 'द्रव्य' में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश के साथ-साथ काल (समय), दिक् (स्थान), आत्मा और मन भी शामिल हैं। यहाँ 'आकाश' केवल शून्य स्थान नहीं, बल्कि ध्वनि का स्थायी आधार (अवकाश द्रव्य) है। इस प्रकार, यह वर्गीकरण भौतिक तत्वों, अमूर्त सत्ताओं (समय-स्थान) और चेतन तत्वों (आत्मा-मन) को एक ही तार्किक ढाँचे में समेटता है। यह द्वैतवाद (पदार्थ और चेतना को पृथक मानना) और एकात्मक भौतिकवाद के बीच एक मध्यम मार्ग प्रस्तुत करता है।

4.2 परमाणु सिद्धांत: प्राचीनता में आधुनिकता का बीज

वैशेषिक का परमाणु सिद्धांत इसके वैज्ञानिक पक्ष का सबसे प्रबल उदाहरण है। इसके अनुसार, समस्त भौतिक सृष्टि (पृथ्वी, जल, तेज, वायु) अंततः अविभाज्य, नित्य और अदृष्ट 'परमाणुओं' के संयोग से बनी है। ये परमाणु स्वयं सदा विद्यमान रहते हैं, केवल इनके संयोग (द्व्यणुक, त्र्यणुक आदि) से ही नश्वर वस्तुओं का निर्माण होता है। आधुनिक परमाणु सिद्धांत से इसकी तुलना दिलचस्प है:

समानता: दोनों सिद्धांत जटिल पदार्थ के निर्माण के लिए मूल अविभाज्य इकाइयों (परमाणु/क्वार्क) के संयोग को मानते हैं।

विषमता: वैशेषिक परमाणु केवल यांत्रिक रूप से जुड़ते हैं, जबकि आधुनिक सिद्धांत रासायनिक बंधों और उप-परमाणु कणों की अंतःक्रियाओं की जटिलता को स्वीकार करता है। सबसे बड़ा अंतर यह है कि वैशेषिक परमाणुवाद का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, न कि केवल भौतिक संरचना की व्याख्या।

4.3 समवाय एवं क्वांटम उलझाव: एक दार्शनिक समानांतर

'समवाय' वह अविभाज्य, स्थायी संबंध है जो किसी वस्तु और उसके गुण, या समग्र और उसके अंग के बीच होता है (जैसे कपड़े और उसके धागे)। यह संबंध न तो स्वतंत्र सत्ता है और न ही पूर्णतः अलग; यह दोनों के बीच की अनिवार्य एकता है। यह अवधारणा आधुनिक क्वांटम भौतिकी की 'क्वांटम एन्टैंगलमेंट' (उलझाव) की घटना के साथ एक आश्चर्यजनक दार्शनिक

प्रतिध्वनि रखती है, जहाँ दो कण इतने गहरे रूप से जुड़ जाते हैं कि एक का गुण दूसरे को तुरंत प्रभावित करता है, चाहे उनके बीच की दूरी कितनी भी हो। यद्यपि वैशेषिक ने इसे भौतिक स्तर पर नहीं, बल्कि तात्विक स्तर पर परिभाषित किया है, किंतु यह हमें ब्रह्माण्ड की गहरी अंतःसंबद्धता के विचार की ओर ले जाता है।

4.4 वैशेषिक आधारित पारिस्थितिकीय नैतिकता: एक प्रस्ताव

वैशेषिक दर्शन आधुनिक पर्यावरण संकट के समाधान हेतु एक मजबूत दार्शनिक आधार प्रस्तुत कर सकता है।

1. **सभी तत्वों के प्रति आदर:** चूँकि समस्त भौतिक जगत एक ही मूल तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के विविध संयोग से बना है, इसलिए प्रकृति के सभी रूपों में एक मूलभूत एकता और पवित्रता निहित है।
2. **संतुलन का सिद्धांत**: प्रकृति के इन तत्वों का संतुलन ही स्वस्थ अस्तित्व का आधार है। मानवीय कर्म (जैसे अत्यधिक प्रदूषण) इन तत्वों के संतुलन को बिगाड़ते हैं, जिसका दुष्प्रभाव अंततः मनुष्य पर ही पड़ता है। यह कारण-कार्य का एक नैतिक विस्तार है।
3. **समवाय की भावना**: चूँकि हम प्रकृति के साथ 'समवाय' (अविभाज्य संबंध) में हैं, इसलिए उसका शोषण स्वयं के अंगों के शोषण के समान है। इस प्रकार, वैशेषिक एक पारिस्थितिकी-केंद्रित (Eco-centric) नैतिकता का मार्ग प्रशस्त करता है, जहाँ मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक अविभाज्य अंग है।

5. निष्कर्ष

इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि वैशेषिक दर्शन का पदार्थ विश्लेषण केवल एक पुरातन दार्शनिक व्यायाम नहीं है। इसके सप्त पदार्थों का वर्गीकरण, परमाणु की अवधारणा, और विशेष रूप से 'समवाय' का सिद्धांत, आधुनिक वैज्ञानिक एवं दार्शनिक चिंतन के लिए गहन अंतर्दृष्टि से भरे हुए हैं। यह दर्शन हमें ब्रह्माण्ड की एकता, अंतःसंबद्धता और उसकी विविधता में निहित व्यवस्था को समझने का एक समग्र मॉडल प्रदान करता है।

निस्संदेह, इसकी सीमाएँ हैं। इसका तत्व वर्गीकरण आधुनिक रसायन विज्ञान की जटिलता को नहीं समेटता और इसका परमाणु सिद्धांत आधुनिक भौतिकी की गतिशीलता से दूर है। किंतु, इसका मूल्य उसके विशिष्ट वैज्ञानिक पूर्वानुमानों में कम, बल्कि उसके दार्शनिक ढाँचे में अधिक निहित है। आज जब विज्ञान और नैतिकता के बीच की खाई चौड़ी हो रही है, वैशेषिक दर्शन हमें यह स्मरण कराता है कि भौतिक जगत का अध्ययन और आध्यात्मिक उन्नति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। भविष्य के शोध इस दर्शन को आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र और समकालीन विज्ञान नीति के साथ जोड़कर इसकी व्यावहारिक उपयोगिता को और स्पष्ट कर सकते हैं। इस प्रकार, वैशेषिक दर्शन केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि एक स्थायी एवं जीवंत विचारधारा है जो मानवता को भविष्य का मार्ग दिखाने की क्षमता रखती है।

6. ग्रंथ सूची

1. कणाद। (अनु.)। वैशेषिक सूत्र। (श्रीनिवास शास्त्री, अनुवादक)। चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
2. प्रशस्तपाद। (अनु.)। पदार्थधर्मसंग्रह। (धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री, सम्पादक)। श्री लाल बहादुर शास्त्र राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ।
3. राधाकृष्णन, एस. (१९२३)। इंडियन फिलॉसफी (खंड १)।
4. दासगुप्ता, एस. एन. (१९२२)। ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी (खंड १)।